बी॰ए॰ द्वितीय वर्ष (II)

प्रथम प्रश्न पत्र : मनोविकृति विज्ञान

(psychopathology)

मनोविकृति का तात्पर्य असामान्य व्यवहार या मानसिक
विकृतियों से लिया जाता है। 'Abnormal' की उत्पत्ति
'Anomelos' से हुई है जिसमें ano का अर्थ नहीं (not)
तथा 'melos' का अर्थ नियमित (regular) होते हैं। इ
Abnormal का अर्थ नियमित नहीं होते हैं। इस आधार
यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति का अनियमित
ही असामान्य व्यवहार या मनोविकृति व्यवहार है।

कुछ विद्वानों के अनुसार Abnormal दो श
Ab + normal से मिलकर बना है जिसमें Ab का
दूर (away) तथा normal का अर्थ है सामान्य
इस प्रकार Abnormal का अर्थ सामान्य से परे या दू
व्यवहार है जिसे असामान्य या मनोविकृति की संज्ञा
Kisker (1985) के अनुसार "मानव के ऐसे व्यव
अनुभवों को असामान्य माना जाता है, जो अनोखा, अस
या भिन्न होते हैं।" (away from the normal
Mangal (1993) ने भी Ab. Be. को इसी अर्थ
मापित किया है। इनके अनुसार "सामान्य शब्द
है कि निर्धारित नियम, प्रतिरूप या मानक व
असामान्य' शब्द का अर्थ है सामान्य से विच

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर क
कता है कि जिस व्यवहार को किसी राष्ट्र, संस
माज के लोग मानक व्यवहार के रूप में स्वीक
ते हैं, वही व्यवहार सामान्य व्यवहार कहलाता है
। व्यवहार से भिन्न या विचलित जो भी व्यव
वह असामान्य व्यवहार कहलाता है।

Characteristics of Abnormal behaviour

असामान्य व्यवहार से तात्पर्य सामान्य जैसे व्यवहार से होता है जो सामाजिक मानक (Social norms) एवं प्रत्याशाओं के प्रतिकूल होता है तथा साथ ही साथ कुसमायोजी भी होता है। असामान्य व्यवहार की निम्नोलिखित विशेषताएं हैं-

1- समाज विरोधी व्यवहार (Antisocial behaviour) - असामान्य व्यवहार सामान्य रूप से स्वीकृत नियमों, सामाजिक मानकों (Social norms) एवं मूल्यों (Values) का विरोधी होता है। जब व्यक्ति कोई भी व्यवहार इस ढंग का करता है कि उसने समाज के नियमों एवं मानकों का उल्लंघन होता है तो यह अनुचित रूप से असामान्य व्यवहार कहलाता है। जैसे- चोरी करना, बलात्कार करना, हत्या करना आदि।

2- मानसिक असंतुलन (mental imbalance) - असामान्य व्यवहार करने वाले व्यक्ति मानसिक रूप से असंतुलित होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विचारों एवं व्यवहारों में काफी अस्थिरता पायी जाती है। इस अस्थिरता के कारण इनके सोचने एवं व्यवहार करने के ढंग में काफी असंगतता दिखलाई पड़ती है जो स्वभावतः एक सामान्य व्यक्ति के व्यवहार में नहीं पाया जाता है।

3- अपर्याप्त समायोजन (Poor adjustment) - असामान्य व्यवहार को एक विशेषता यह भी है कि ऐसे व्यवहार में समायोजन की अपर्याप्तता होती है। ऐसे व्यक्ति समाज के भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते हैं, इस कारण वे प्रायः समाज में तिरस्कृत भी होते हैं।

4- सूझपूर्ण व्यवहार की कमी (Lack of insightful behaviour) - असामान्य व्यवहार में सूझ की कमी होती है जिसके कारण। असामान्य व्यक्ति को सही-गलत, नैतिक-अनैतिक, अच्छा-बुरा का ज्ञान नहीं होता है। फलस्वरूप ऐसे व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं। इस तरह का व्यक्ति जब जैसा मन होता है, वैसा व्यवहार करता है। न तो वह किसी की आलोचना का डर होता है और न ही वह सामाजिक बंधनों एवं नियमों की परवाह होती है।

5- विघटित व्यक्तित्व (Disorganized Personality) - असामान्य व्यवहार व्यक्तियों का व्यक्तित्व अधिक विघटित होता है। इनके संज्ञानात्मक (cognitive), क्रियात्मक (motor) एवं भावात्मक (affective) पक्षों में कोई तालमेल नहीं होता है। इनका व्यवहार इतना अविवेकी तथा असंगत हो जाता है कि उससे लोगों के लिए कोई सही अर्थ निकालना संभव नहीं रह जाता है।

6- आत्मज्ञान तथा आत्म-सम्मान की कमी (Lack of self-knowledge and self-esteem) - असामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति यह नहीं समझते हैं कि वह क्यों किसी खास व्यवहार को करते हैं और उनमें दूसरों के प्रति क्यों एक विशेष तरह का भाव उत्पन्न होता है। ऐसे व्यक्ति अपने गुण एवं दायित्व का भी सही-2 मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं। इसके साथ-2 इनमें आत्मसम्मान की भी कमी होती है। वे अपने आपको अनादर एवं हीनता के भाव से देखते हैं और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में वे अपने को कुसमायोजित पाते हैं।

7- असुरक्षा की भावना (Feeling of insecurity) - असामान्य व्यक्तियों में असुरक्षा की भावना तीव्र होती है। प्रायः यह देखा गया है कि ऐसे

(व्यवहार)- व्यक्ति अपने आपको समाज का एक स्वीकृत हिस्सा नहीं मानते हैं। ऐसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को शंका की निगाह से देखते हैं और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में भी खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। वे प्रायः डरे-डरे रहते हैं।

8 - संवेगात्मक अपरिपक्वता (Emotional immaturity) - ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग पर न के बराबर नियंत्रण रहता है। अकारण रो देना तथा अकारण हँस देना इनकी आदत होती है। परिस्थिति के अनुकूल संवेग को नियंत्रण कर उसकी उचित अभिव्यक्ति तो इन्हें आता ही नहीं। अतः ऐसे लोग संवेगात्मक रूप से अनुपयुक्त होते हैं जिसके कारण इनमें सांवेगिक असमायोजन की समस्या भयंकर रूप से उत्पन्न हो जाती है।

9 - सामाजिक अनुकूलन की क्षमता का अभाव (Lack of Social adaptability) - ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों में सामाजिक अनुकूलन की क्षमता का अभाव होता है। ये अपने सहकर्मियों, पास-पड़ोसियों के साथ अधिक संतोषजनक सामाजिक संबंध बनाये रखने में असमर्थ रहते हैं। इतना ही नहीं ऐसे व्यक्तियों का अनुकूलन अपने घर के सदस्यों के साथ भी ठीक नहीं होता है। सांवेगिक अस्थिरता के कारण इनकी मानसिक अवस्था में तुरंत-तुरंत परिवर्तन होता रहता है जिससे इनकी ~~अनुकूलन~~ सामाजिक और घरेलू अनुकूलन क्षमता ~~में कमी आ जाती~~

10 - तनाव एवं अतिसंवेदनशीलता (Tension and hyper-sensitivity) - असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार तनावपूर्ण एवं संवेदनशील होता है। इनको अपने संवेग एवं भाव पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। फलतः प्रायः इनमें मानसिक तनाव की स्थिति बनी रहती है जिससे के

कोई किसी कार्य या घटना पर ध्यान-केन्द्रित नहीं कर पाते हैं, किसी साधारण घटना से भी इतने अधिक उत्तेजित हो जाते हैं कि ये बेचैन दिखाई देने लगते हैं और इनके व्यवहार में नियमितता तथा प्रासंगिकता नाम की कोई चीज नहीं रह जाती।

11- पश्चाताप का अनुभव नहीं होना (No feeling of remorse)-

ऐसे व्यक्तियों को अपनी ~~आदतों~~ गलतियों के लिए किसी प्रकार का पश्चाताप नहीं होता है। इनको इतनी समझ नहीं होती है कि इनके द्वारा किया गया कार्य गलत भी हो सकता है। फलतः उसे सुधारने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। ये एक गलत कार्य के बाद दूसरा गलत कार्य निःसंकोच करते हैं क्योंकि इन्हें इस बात की चिन्ता नहीं होती कि समाज इन्हें क्या कहेगा।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर असामान्य व्यवहार को आसानी से समझा जा सकता है।

Criteria, View points on models of Abnormality (असामान्यता के मापदण्ड, दृष्टिकोण या मॉडल)

इन पाँच कसौटियों के आधार पर असामान्य व्यवहार को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया गया है—

1- सांख्यिकी अवारंबारता की कसौटी (Criteria of Statistical infrequency)—

इस कसौटी के अनुसार वे सभी व्यवहार असामान्य हैं जो सांख्यिकी औसत से विचलित होते हैं। जो व्यवहार इस औसत में आते हैं, वे सामान्य कहलाते हैं और इससे जो भिन्न होते हैं, उन्हें असामान्य कहा जाता है। उदा० के लिए बुद्धि। अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि-लब्धि औसत (90-110) होती है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिनकी I.Q. निम्न या उच्च होता है। निम्न I.Q. वाले को मंद तथा उच्च वाले को प्रतिभाशाली कहा जाता है अर्थात जो सांख्यिकी औसत से नीचे या ऊपर है, वह असामान्य है।

इस कसौटी का दोष यह है कि न केवल औसत से निम्न I.Q. वाले व्यक्ति औसत से उच्च जैसे 140 या 160 या इससे भी अधिक I.Q. वाले भी असामान्य कहलायेंगे जो कि वर्तमान में होगा।

मानक अतिक्रमण की कसौटी (Criteria of Norms Violation)—

जब व्यक्ति का व्यवहार

समाज के मानक के अनुरूप होता है तो उसे सामान्य कहा जाता है परंतु जब उनका व्यवहार मानक का अतिक्रमण करता है, तो उसे असामान्य कहा जाता है। जैसे कुछ समाज के मानक होते हैं जिनमें चचेरे-फुफेरे भाई-बहन में शादी को सामान्य समझा जाता है जबकि कुछ में इसे असामान्य समझा जाता है।

इस कसौटी में भी दोष है। एक ही व्यवहार एक समाज में सामान्य हो सकता है परंतु वही व्यवहार दूसरे समाज के लिए असामान्य क्योंकि उस व्यवहार से मानक का अतिक्रमण हो सकता है।

(iii) व्यक्तिगत व्यथा की कसौटी (Criteria of Personal distress) –

व्यक्ति का ऐसा व्यवहार जिससे उसे अधिक कष्ट या यातना उत्पन्न होता है तो इसे A·b कहा जायेगा। चिन्ता विकृति तथा विषाद से ग्रस्त व्यक्तियों को अधिक यातना सहना पड़ता है। अतः उनके इस व्यवहार को इस कसौटी के अनुसार A·b कहा जायेगा।

परन्तु इस कसौटी के साथ कठिनाई यह है कि व्यक्ति अपनी व्यथा का स्वयं अनुमान लगाता है। वह उसका कम या अधिक अनुमान लगा सकता है। इसी प्रकार कभी-2 व्यक्ति शारीरिक दशाओं में गड़बड़ी के कारण भी व्यथा (कष्ट) अनुभव करता है। जैसे- अत्यधिक दर्द होना। परन्तु इसे असामान्य व्यवहार कहना उचित नहीं है।

(IV) कुसमायोजन की कसौटी (Criteria of maladaptation)
असमर्थता या कुक्रिया (Disability and dysfunction)

Ab B. के निर्धारण में कुसमायोजी कसौटी का प्रयोग होता है। कारसन इत्यादि (1988) के अनुसार, यदि व्यवहार कुसमायोजी है तो वह Ab. B. है। अर्थात ऐसा व्यवहार जो समायोजन में बाधा उत्पन्न करता है, व्यक्ति के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, उसके अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न करता है, उसकी क्षमता के विकास को अवरुद्ध करता है, ~~उसे Ab b कहा जायेगा~~ वह Ab. b. कहलायेगा।

उपर्युक्त दृष्टि से विचार करें तो व्यक्ति के अनेक कार्य एवं व्यवहार असामान्य की श्रेणी में आ जायेंगे। जैसे - मदिरापान, मनोविदलता जैसी मानसिक विकृतियाँ, पूर्वाग्रह, रूढ़ियुक्तियाँ, भ्रष्टाचार, जुआ आदि सभी असामान्य कहे जायेंगे क्योंकि इनका व्यक्ति के समायोजन तथा स्वास्थ्य पर प्रति-कूल प्रभाव पड़ता है।

(V) अप्रत्याशा की कसौटी (Criteria of Unexpectedness)

कुछ विद्वानो का मत है कि किसी उद्दी. या परिस्थिति के प्रति अचानक या अप्रत्याशित रूप में उत्पन्न होने वाला व्यवहार Ab.B है। जैसे - एक छात्र पढ़ने में अच्छा है परन्तु और भी अच्छा बनने के प्रयास में इतना उलझा रहता है कि उसमें चिन्ता व्याप्त हो जाती है। इसे Ab B. माना जा सकता है क्योंकि यह स्थिति समायोजन में व्यवधान डालती है। लेकिन सभी अप्रत्याशित या आकस्मिक व्यवहारों को

Ab. B. नहीं माना जा सकता है। जैसे - रास्ते में जाते समय अचानक साँप देखकर डर कर चिल्लाना एक अप्रत्याशित व्यवहार है परंतु इसे Ab. B. नहीं कहा जायेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि Ab. B. के लिए कई मापदण्ड प्रयोग किये गये, परंतु इनमें से कोई भी मापदण्ड प्रत्येक प्रकार के Ab. B. को स्पष्ट करने में सफल नहीं है।

इससे स्पष्ट होता है कि Ab. B. की सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है। फिर भी कुछ बिन्दुओं को आधार मानकर Ab. B. को चिन्हित किया जा सकता है। Comer (1995) ने ऐसे चार आधारों का उल्लेख किया है। इन्हें विचलन (Deviance), व्यथा (Distress), दुष्क्रिया (Dysfunction) या कुसमायोजन एवं खतरा (danger) इन्हें Four-D भी कहते हैं। अर्थात Ab. B. वह व्यवहार

1- जो सामाजिक मानकों से विचलित या भिन्न है।
2- जो व्यक्ति को कष्ट या तकलीफ में डालता है।
3- जो समायोजन में कठिनाई उत्पन्न करता है।
4- जो व्यक्ति के साथ-2 समूह एवं समाज के लिए भी समस्यायें या संकट उत्पन्न करता है।

इससे स्पष्ट होता है कि Ab. B. के अर्थ एवं स्वरूप को समझने का (Four-D) Four Dimensional aspect कहीं अधिक व्यापक एवं मान्य है।

International classification of Diseases

WHO ने सन 1992 में ICD-10 नामक सभी प्रकार के रोगों का वर्गीकरण प्रकाशित किया। इसमें DSM-IV की सभी विशेषतायें पायी जाती हैं हालांकि इसकी कुछ विशेषतायें DSM-IV में नहीं मिलती हैं। इसके पांचवे अध्याय में मानसिक रोगों को विस्तार से वर्गीकृत किया गया है। इसमें प्रत्येक विकृति को चिन्हित करने के लिए "अक्षर-अंक-कूट" (Alphanumerical code) का उपयोग किया गया है। यह कूट अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर F से आरंभ होता है तथा F के आगे कोई अंक लगा रहता है जो उस रोग के बारे में प्रथम जानकारी देता है। इस वर्गीकरण में इटियोलॉजिकल कारणों के आधार पर, 10 प्रमुख वर्गों का प्रयोग किया है जो निम्न हैं—

F00–F09: आंगिक लक्षणायुक्त मानसिक विकृतियाँ (Organic Including Symptomatic Mental Disorders)

इस वर्ग में इन मानसिक विकृतियों को रखा गया है जो मस्तिष्कीय रोगों अथवा आघातों के कारण उत्पन्न होते हैं। इस वर्ग में एक तरफ जहाँ विभिन्न प्रकार के मनोभ्रंश (Dementias) (Alzheimer's diseases, vascular dementia, Pick's dis, Huntington, Parkinson

और HIV रोगों के मनोभ्रंश) को वर्गीकृत किया गया है वहीं दूसरी तरफ आंगिक रोग या क्षति से उत्पन्न विभिन्न प्रकार की लक्षणयुक्त विकृतियों (उन्माद, व्यामोही, विभ्रम, मनोदशा, चिन्ता, व्यक्तित्व आदि विकृतियों) को भी वर्गीकृत किया गया है।

2- F10-F19: मनोसक्रिय पदार्थों के कारण उत्पन्न मानसिक एवं व्यवहार विकृतियाँ (Mental and Behavioural Disorders due to Psychoactive Substance Use)

इस वर्ग में उन मानसिक विकारों को सम्मिलित किया गया है जिनकी उत्पत्ति मादक पदार्थों जैसे शराब, चरस, गांजा, भांग, हेरोइन, तम्बाकू, कोकीन आदि के सेवन से उत्पन्न होती है। इन मादक पदार्थों के उपयोग से रोगी में मानसिक ह्रास तथा मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न होते हैं। इसमें मनोविक्षिप्तता (Psychotic), मनोभ्रंशता (Dementia) आदि मनोविकारों को सम्मिलित किया गया है।

3- F20-F29: मनोविदलता, मनोविदलतासम एवं व्यामोही विकृतियाँ (Schizophrenia, Schizotypal and Delusional Disorders)

इस वर्ग में Schi. समूह को एक प्रमुख सदस्य के रूप

में Schi, मनोविदलतारूप, व्यामोही विकृतियों, मनोविदलित्वता विकृतियों और तीव्र तथा अल्पकालीन मनोविक्षिप्तता विकृतियों को एक साथ सम्मिलित किया गया है।

4- F30–F39: मनोदशा (मनोभाव) विकृतियाँ Mood (Affective) Disorders) -

इस वर्ग में उन्हीं विकृतियों को वर्गीकृत है जिनकी प्रमुख विशेषता होती है — मनोदशा एवं मनोभाव में विक्षोभ। यह विक्षोभ गहन विषाद से लेकर उल्लास (Elation) तक का परिवर्तन हो सकता है। इस वर्ग के प्रमुख मनोविकार हैं — उन्माद (Mania), द्विध्रुवीय मनोभाव विकृति (Bipolar affective dis.), विषाद एवं हठ मनोदशा विकृतियाँ (Persistent mood dis.)।

5- F40–F49: मनस्तापी, प्रतिबल संबंधी एवं कायरूप या दैहिक विकृतियाँ (Neurotic, Stress-Related and Somatoform Disorders)

इस वर्ग में इन सभी मानसिक विकृतियों को रखा एवं व्यवहार संबंधी असामान्यताओं को वर्गीकृत किया गया है जिनका आधार किसी न किसी रूप में चिन्ता होती है। इस वर्ग में Phobic Anxiety dis, Panic dis, GAD, OCD, प्रतिबल जन्य एवं समायोजनात्मक विकृतियाँ (Reaction to severe stress and adjustment dis)

मनोविक्षेपी (स्थानान्तर) Dissociative (Conversion) dis एवं अन्य मनस्तापी विकृतियाँ सम्मिलित है।

6- F50-F59: शारीरिक एवं भौतिक कारणों से उत्पन्न व्यवहारिक संलक्षण (Behavioural Syndromes Associated with Physiological Disturbance and Physical Factors)- इस वर्ग में Eating dis, sleep dis तथा Sexual dysfunctions (यौन दुष्क्रियाओं) को समूहीकृत किया गया है। साथ ही साथ कुछ ऐसे व्यवहार संबंधी लक्षणों को रखा गया है जिनका संबंध प्रसवोत्तर काल तथा अतिनिर्भरता जनक पदार्थों के दुर्व्यसन से होता है।

7- F60-F69: वयस्क व्यक्तित्व एवं व्यवहार संबंधी विकृतियाँ (Disorders of Adult Personality and Behaviour) — इस वर्ग में उन व्यक्तित्व विकारों को रखा गया है जो व्यक्ति के विशिष्ट जीवन शैली तथा विशेष व्यवहार पद्धति से संबंधित होते हैं। इनमें से कुछ जीवन शैलियाँ और व्यवहार पद्धतियाँ व्यक्ति के विकास की प्रारंभिक अवस्था में शरीर संरचना एवं सामाजिक अनुभवों के कारण प्रकट होती हैं तथा बाद में उनका विकास होता है। इन व्यक्तित्व विकारों को मानसिक विकारों की संज्ञा दी जाती है। इस वर्ग में लिंग पहचान, काम-अनुराग, काम-आवेग, यौन-विकास, पुरुषांगी

अग्न्योन्माद (Pyromania), चोर्योन्माद (Klepto-mania) एवं आदत तथा आवेग संबंधी विभिन्न विकृतियों को भी वर्गीकृत किया गया है।

8- F70 - F79 : मानसिक मंदन (Mental Retardation) -

इस वर्ग में बौद्धिक क्षीणता को एक मानसिक विकार मानकर रखा गया है क्योंकि मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाने पर ऐसे व्यक्ति नवीन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में न तो उपयुक्त व्यवहार कर पाते हैं और न ही दूसरों द्वारा शोषण होने पर अपनी सुरक्षा कर पाते हैं। इस वर्ग में अल्प मंद (mild) मानसिक मंद, मध्यम (moderate) m. R., तीव्र (severe) m. R., अति तीव्र (Profound) m. R. एवं अन्य m. R. नामक उपवर्ग वर्णित हैं।

9- F80 - F89 : मनोवैज्ञानिक विकास की विकृतियाँ (Disorders of Psychological Development) -

इस वर्ग में उन मानसिक विकारों को रखा गया है जिनका विकास शैशवावस्था अथवा बाल्यावस्था में प्रारंभ हो जाता है। इन मानसिक विकारों में भाषा, दृष्टि तथा गति संबंधी क्रियाओं में उत्पन्न दोषों को सम्मिलित किया जाता है। इन दोषों के कारण बच्चों के स्नायुतंत्र (Nervous

system) का अपरिपक्व विकास है। इन मानसिक विकारों का प्रमुख लक्षण यह है कि इनमें न तो अग्रगति (steady course) पाया जाता है और और न ही लक्षणहीनता अथवा पुनरावृत्ति (relapse) पाया जाता है। इस वर्ग में भाषा संबंधी विभिन्न विकृतियाँ, विद्यालयी कौशल संबंधी विकृतियाँ, पेशीय गतिपेशीय विकृतियाँ, मिश्रित विकासात्मक विकृतियाँ व्यापक विकासात्मक विकृतियाँ (Pervasive D.D.) एवं अन्य अनिर्दिष्ट मनोवैज्ञानिक विकास की विकृतियों को सम्मिलित किया गया है।

10- F90 - F98: बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के व्यवहारिक एवं संवेगात्मक विकृतियाँ (Behavioural and Emotional Disorders of Childhood and Adolescence)

इस वर्ग में बाल्यावस्था और किशोरावस्था में दिखायी पड़ने वाले व्यवहारपरक एवं सांवेगिक/भावात्मक विकारों को रखा गया है। इन विकारों की अभिव्यक्ति में वैयक्तिक भिन्नता पाया जाती है। इस वर्ग में सम्मिलित मानसिक विकृतियों में प्रमुख हैं - अतिक्रिया शीलता विकृतियाँ (Hyperkinetic dis) आचरण विकृतियाँ (conduct dis) आचरण एवं भावनाओं की मिश्रित विकृतियाँ (mixed disorders of conduct and Emotions), बाल्यावस्था में

classmate
Date
Page

प्रारंभ हुई संवेगात्मक विकृतियाँ (Emotional dis. with Onset in childhood) बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में प्रारंभ सामाजिक क्रियाशीलता की विकृतियाँ जैसे स्वभावकृति विकृतियाँ (Tic dis)